ईश्वरीय कृपा

असामान्य कृपा की अपेक्षा करें। लोग जो अपेक्षा करते हैं कि आपके
साथ हो, उसके ठीक विपरीत परमेश्वर कार्य करेगा।

मुद्रण और वितरणः **ऑल पीपल्स चर्च एवं विश्व सुसमाचार सम्पर्क, बंगलौर**
प्रथम संस्करण फरवरी 2013

अनुवादक : डॉर्थी शरदकान्त थॉमस
प्रूफ रीड़िंग : शरदकान्त थॉमस
मुखपृष्ठ एवं ग्राफिक डिज़ाईन : सुजित जॉन एब्राहाम

Contact Information:
All Peoples Church & World Outreach,
319, 2nd Floor, 7th Main, HRBR Layout,
2nd Block, Kalyan Nagar, Bangalore 560 043
Karnataka, INDIA

Phone: +91-80-25452617, +91-80-65970617
Email: contact@apcwo.org
Website: www.apcwo.org

इस्तेमाल किए गए बाइबल के संदर्भ पवित्र बाइबल से लिए गए हैं।

निशुल्क वितरण हेतु
इस पुस्तक का विनामूल्य वितरण ऑल पीपल्स चर्च के सदस्यों, सहभागियों और मित्रों के आर्थिक अनुदानों के द्वारा संभव हुआ है। यदि आपने इस निःशुल्क पुस्तक के द्वारा आशीष पाई है, तो हम आपको निमंत्रित करते हैं कि ऑल पीपल्स चर्च की निःशुल्क प्रकाशन सामग्री की छपाई और वितरण में सहायता करने हेतु आर्थिक रूप से हमें योगदान दें। धन्यवाद!

(Hindi book - Divine Favor)

ईश्वरीय कृपा

विषयसूचि

1. ईश्वरीय कृपा क्या है? 1

2. जब परमेश्वर की कृपा हम पर होती है, तब क्या होता है? 8

3. परमेश्वर की कृपा हम पर किस कारण आती है? 10

4. परमेश्वर की कृपा का भण्डारी बनना 18

1

ईश्वरीय कृपा क्या है?

ईश्वरीय कृपा वह है जिसे परमेश्वर अपने लोगों पर मुक्त करता है। यह उन आशीषों में से एक है जो परमेश्वर हमें देता है। इस सरल अध्ययन में, हम देखेंगे कि ईश्वरीय कृपा क्या है, हमारे जीवनों में उसे कौनसी बात ले आती है और ईश्वरीय कृपा पाने के लिए हम क्या कर सकते हैं।

- ईश्वरीय कृपा क्या है?
- जब परमेश्वर की कृपा हम पर होती है, तब क्या होता है?
- परमेश्वर की कृपा हम पर किस कारण से होती है?

ईश्वरीय कृपा परमेश्वर का दान है जो व्यक्ति पर प्रगट होता है और उस व्यक्ति को प्रभाव, लोगों, स्थानों या अन्य बातों की निकटता, असामान्य अवसर, उन्नति और ईश्वरीय हस्तक्षेप प्रदान करता है।

बाइबल कहती है कि परमेश्वर पक्षपात नहीं करता (रोमियों 2:11; प्रे. काम 10:34)।

परमेश्वर किसी का पक्षपात नहीं करता (रोमियों 2:11)।

परखकर देखो कि यहोवा कैसा भला है! क्या ही धन्य है वह पुरुष जो उसकी शरण लेता है (भजन 34:8)।

तब पतरस ने मुंह खोलकर कहा, अब मुझे निश्चय हुआ, कि परमेश्वर किसी का पक्ष नहीं करता (प्रे. काम 10:34)।

परमेश्वर हर व्यक्ति से समान रूप से प्रेम करता है और वह किसी का पक्षपात नहीं करता। फिर भी हम देखते हैं कि मनुष्य जाति

से व्यवहार करते समय, परमेश्वर कुछ लोगों पर या लोगों के समुह पर समय के किसी क्षण में, उनके जीवनों की विशिष्ट ऋतुओं में या क्षणों में ईश्वरीय कृपा प्रवाहित करता है। और इसी बात के विषय में मैं हमें जागृत करना चाहता हूं, ताकि हम परमेश्वर की ओर से ईश्वरीय कृपा पाने की अपेक्षा कर सकें।

लोगों पर परमेश्वर की कृपा के उतर आने के उदाहरण

नहेम्याह

नहेम्याह ऐसा ही एक जन था जिसने ईश्वरीय कृपा प्राप्त की। बाइबल बाबुल के राजा नबुकद्नेस्सर की कहानी बताती है, जिसने यरूशलेम पर आक्रमण करके उसे जीत लिया (नहेम्याह 1,2)। उसने मंदिर और नगर की दीवारों को ध्वस्त कर दिया और कई लोगों को बंधुए बनाकर ले गया। कुछ परिवर्तन हुए। पर्शियन साम्राज्य ने बाबुल के साम्राज्य को पराजित किया। उस समय परमेश्वर के लोग बन्धुवाई में थे और नहेम्याह राजमहल में राजा के प्यालेदार के रूप में सेवा करता था। राजा जो कुछ पीना चाहता था, वह उसे देता था। जो कुछ यरूशलेम में हो रहा था, उसका समाचार राजमहल में नहेम्याह के पास पहुंचा। उसका हृदय व्याकुल हो गया और उसने महसूस किया कि यरूशलेम के विषय में कुछ करने की आवश्यकता है। उसने स्वयं से कहा, “मुझे वापस जाकर यरूशलेम की दीवारों को फिर बनाने की ज़रूरत है” और वह प्रार्थना करने लगा,

हे प्रभु बिनती यह है, कि तू अपने दासों की प्रार्थना पर, और अपने दास की प्रार्थना पर, और अपने उन दासों की प्रार्थना पर, जो तेरे नाम का भय मानना चाहते हैं, कान लगा, और आज अपने दास का काम सुफल कर,और उस पुरुष को उस पर दयालु कर। (मैं तो राजा का पियाऊ था) (नहेम्याह 1:11)।

इस प्रकार नहेम्याह ने प्रार्थना की और राजा की दृष्टि में परमेश्वर से दया की याचना की। यह ईश्वरीय कृपा के लिए प्रार्थना थी। दो दिन के बाद नहेम्याह वापस अपने राजमहल को लौट जाता है।

अर्तक्षत्र राजा के बीसवें वर्ष के नीसान नाम महीने में, जब उसके सामने दाखमधु था, तब मैंने दाखमधु उठाकर राजा को दिया। इससे पहिले मैं उसके सामने कभी उदास न हुआ था। तब राजा ने मुझसे पूछा, तू तो रोगी नहीं है, फिर तेरा मुहं क्यों उतरा है? यह तो मन ही की उदासी होगी। तब मैं अत्यंत डर गया। और राजा से कहा, राजा सदा जीवीत रहे! जब वह नगर जिसमें मेरे पुरखाओं की कबरें हैं, उजाड़ पड़ा है और उसके फाटक जले हुए हैं, तो मेरा मुंह क्यों न उतरे? राजा ने मुझसे पूछा, फिर तू क्या मांगता है? तब मैंने स्वर्ग के परमेश्वर से प्रार्थना करके, राजा से कहा; यदि राजा को भाए, और तू अपने दास से प्रसन्न हो, तो मुझें यहुदा और मेरे पुरखाओं की कबरों के नगर को भेज, ताकि मैं उसे बनाऊं। तब राजा ने जिसके पास रानी भी बैठी थी, मुझसे पुछा, तू कितने दिन तक यात्रा में रहेगा? और कब लौटेगा? सो राजा मुझे भेजने को प्रसन्न हुआ;और मैंने उसके लिए एक समय नियुक्त किया। फिर मैंने राजा से कहा, यदि राजा को भाए, तो महानंद के पार के अधिपतियों के लिए इस आशय की चिट्ठियां मुझे दी जाएं कि जब तक मैं यहूदा को न पहुंचूं, तब तक वे मुझे अपने अपने देश में से होकर जाने दें। और सरकारी जंगल के रखवाले आसाप के लिए भी इस आशय की चिट्ठी मुझे दी जाए ताकि वह मुझे भवन से लगे हुए राजगढ़ की कड़ियों के लिए, और शहरपनाह के, और उस घर के लिए, जिस में मैं जाकर रहूंगा, लकड़ी दे। मेरे परमेश्वर की कृपादृष्टि मुझपर थी, इसलिए राजाने यह बिनती ग्रहण की (नहेम्याह 2:1–8)।

नहेम्याह ने राजा से क्या मांगा यह समझने की कोशिश करें। उसने मुख्य रूप से राजा को यह बताया कि वह राजा के शत्रुओं के पास वापस जाना चाहता है और राजा के विरोध में खुद का बचाव करने हेतु शक्तिशाली बनने के लिए उनकी सहायता करना चाहता है, क्योंकि उन दिनों में नगर की दीवारें सुरक्षा का मुख्य साधन थीं। यदि वे मज़बूत दीवारों को बनाते, तो वे शत्रु के विरोध में खुद की रक्षा कर सकते थे। यह नहेम्याह की ओर से एक अत्यंत साहसी निवेदन था और फिर भी राजा ने उसके निवेदन को स्वीकार कर लिया। और

स्मरण रखें कि नहेम्याह कोई बड़ा राजनीतिज्ञ या प्रभावशाली व्यक्ति नहीं था, परंतु राजा की सेवा करने वाला मात्र एक सेवक था। नहेम्याह इसे सारांश रूप में इस प्रकार लिखता है,

फिर मैंने उनको बतलाया, कि मेरे परमेश्वर की कृपादृष्टि मुझ पर कैसी हुई और राजा ने मुझसे क्या क्या बातें कही थी। तब उन्होंने कहा, आओ हम कमर बांधकर बनाने लगें। और उन्होंने इस भले काम को करने के लिए हियाव बांध लिया (नहेम्याह 2:8)।

इस तरह नहेम्याह ने न केवल परमेश्वर की कृपा को अनुभव किया, बल्कि दूसरों को उसकी कृपा के विषय में गवाही दी। वास्तव में हुआ यह कि नहेम्याह पर परमेश्वर की जो कृपा थी, उससे लोग उसकी ओर आकर्षित हुए। अन्य लोग भी नहेम्याह के साथ संबंध जोड़ना चाहते थे और उसके मिशन का हिस्सा बनना चाहते थे। परमेश्वर की कृपा आपके और मेरे लिए, आज भी यही कर सकती है।

नहेम्याह परमेश्वर की कृपा या अनुग्रह में चला और इसके द्वारा अन्य लोगों के हृदयों में भी ऐसा साहस उत्पन्न हुआ, और वह भी विरोध के होते हुए, सबने यह कहते हुए विरोध का सामना किया कि "स्वर्ग का परमेश्वर हमारा काम सुफल करेगा, इसलिए हम उसके दास कमर बांधकर बनाएंगे" (नहेम्याह 2:20)। इस प्रकार, वे जानते थे कि वे परमेश्वर की कृपा के समय में हैं और उन्होंने पहचाना कि परमेश्वर उनके मध्य क्या कर रहा है। उन्होंने विश्वास किया कि परमेश्वर की कृपा का हाथ उन पर है, और लोग चाहे जो कहें, वे कमर बांधकर बनाएंगे।

जोसेफ

उत्पत्ति 39 में यूसुफ की कहानी में बताया गया है कि किस प्रकार उसके भाइयों ने उसे गुलाम के रूप में मिस्र में बेच दिया। वहां पर उसने पोतीफर के घर में सेवा की और बाद में उसे बंदीगृह में डाल दिया गया।

परंतु यहोवा यूसुफ के संग संग रहा, और उस पर करूणा की, और बन्दीगृह के दारोगा के अनुग्रह की दृष्टि उस पर हुई। सो बन्दीगृह के दारोगा ने उन सब मनुष्यों को, जो कारागार में थे, यूसुफ के हाथ में सौंप दिया; और जो जो काम वे वहां करते थे, वही उसी की आज्ञा से होता था (उत्पत्ति 39:21,22)।

अतः, बन्दीगृह में भी दारोगा ने उसे अधिकारी बनने की बिनती की। यह ईश्वरीय कृपा है। दारोगा ने एक पल भी नहीं सोचा कि यूसुफ खुद भी बाहर निकल जाएगा और अन्य कैदियों को भी आज़ाद कर देगा। कल्पना कीजिए कि एक कैदी कारागार की अपनी ही कोठरी में अधिकारी बन जाता है।

वह उनसे ये बातें कहकर गलील ही में रह गया। परन्तु जब उसके भाई पर्व में चले गए, तो वह आप ही प्रगट में नहीं, परन्तु मानो गुप्त रीति से गया (प्रे. काम 7:9,10)।

परमेश्वर ने यूसुफ पर कृपा प्रदान की और एक ही रात में वह कैदी से मिस्र देश का प्रधानमंत्री बन गया। परमेश्वर की कृपा हमारे जीवन में यही करती है। एक पल में, सब कुछ बदल जाता है।

मिस्र देश में इस्राएली लोग

इस्राएली लोग 400 वर्ष तक मिस्र में गुलाम थे। परमेश्वर ने मूसा के मिशन के आरम्भ में उससे कहा, “तब मैं मिस्रियों से अपनी इस प्रजा पर अनुग्रह करवाऊंगा; और जब तुम निकालोगे तब छूछे हाथ न निकलोगे ।बरन तुम्हारी एक एक स्त्री अपनी अपनी पड़ोसिन, और अपने अपने घर की पाहुनी से सोने चांदी के गहने, और वस्त्र मांग लेगी, और तुम उन्हें अपने बेटों और बेटियों को पहनाना; इस प्रकार तुम मिस्रियों को लूटोगे” (निर्गमन 3:21,22)। परमेश्वर मूसा से कहता है कि वह मिस्रियों की दृष्टि में इस्राएलियों को अनुग्रह प्रदान करेगा – वे लोग जिन्होंने इतने वर्षों से उन्हें गुलाम बना रखा था। वह मूसा से कहता है कि जब इन लोगों को मिस्र देश से बाहर ले जाने का समय आएगा,

तब मूसा वाचा के देश की ओर मूसा उनकी अगुवाई करेगा। परमेश्वर को स्पष्ट रूप से कहता है कि इस्राएली मिस्र देश से खाली हाथ नहीं जाएंगे क्योंकि उसका अनुग्रह उन पर हैं।

तब यहोवा ने मिस्रियों को अपनी प्रजा पर दयालु किया। और इससे अधिक वह पुरुष मूसा मिस्र देश में फ़िरौन के कर्मचारियों और साधारण लोगों की दृष्टि में अति महान् था (निर्गमन 11:3)।

अचानक, मिस्रियों की राय, उनका दृष्टिकोण और वे इस्राएलियों के साथ जो करना चाहते थे, वह उद्देश्य बदल जाता है। प्रभु ने इस्राएलियों को मिस्रियों के सामने कृपा प्रदान की। सब कुछ बदल गया!

और इस्राएलियों ने मूसा के कहने के अनुसार मिस्रियों के सोने चांदी के गहने और वस्त्र मांग लिये। और यहोवा ने मिस्रियों को अपने प्रजा के लोगों पर ऐसा दयालू किया, कि उन्होंने जो जो मांगा वह सब उनको दिया। इस प्रकार इस्राएलियों ने मिस्रियों को लूट लिया। तब इस्राएली रामसेस से कुच करके सुक्कोत को चले, और बाल–बच्चों को छोड़ कोई छः लाख पुरुष प्यादे थे (निर्गमन 12:35–37)।

उसी तरह, मिस्रियों की दृष्टि में ईश्वरीय कृपा पाने के कारण, मिस्रियों ने इस्राएलियों को वह सब कुछ दिया जो वे चाहते थे। इस प्रकार उन्होंने मिस्रियों को लूट लिया। कल्पना कीजिए, आपके घर की नौकरानी आपसे आकर कहती है कि आप उसे अपना सारा सोना और कपड़े दे दें। आप सोचेंगे कि वह पागल हो गई है। परंतु 400 वर्षों की गुलामी के बाद इस्राएलियों ने मिस्रियों से यही मांगा। ईश्वरीय कृपा के एक क्षण में, सम्पत्ति का अंतरण हुआ– मिस्रियों के हाथ से इस्राएलियों के हाथ में। यह सब कुछ एक रात में हो गया।

क्या आप विश्वास करते हैं कि परमेश्वर यह आज आपके लिए और मेरे लिए कर सकता है? क्या आप विश्वास करते हैं कि परमेश्वर

ईश्वरीय कृपा की ऋतु या ईश्वरीय कृपा के क्षण आपके और मेरे जीवन में भेज सकता है? मेरा विश्वास है कि परमेश्वर भेज सकता है! समय बदल गए हैं। लोग बदल गए हैं। परंतु परमेश्वर ऐसा परमेश्वर है जो अपने लोगों पर ईश्वरीय कृपा भेजता है। वह अपने लोगों पर कृपा करता है और ऐसी बातों को घटित करता है जो अन्यथा कभी न होती।

2

जब परमेश्वर की कृपा हम पर होती है, तब क्या होता है?

ईश्वरीय कृपा लोगों के मध्य प्रभाव प्रदान करती है। नहेम्याह कुछ भी नहीं था। यूसुफ एक कैदी था। इस्राएली लोग गुलाम थे। परंतु जब परमेश्वर की कृपा उन पर प्रगट हुई, तब उन्होंने लोगों के मध्य प्रभाव प्राप्त किया। उन्होंने कहा और उनकी ओर से कार्य हुए।

लोग, स्थान और वस्तुओं की निकटता

परमेश्वर की कृपा लोगों की निकटता प्रदान करती है, स्थानों व वस्तुओं की ओर प्रवेश प्राप्त होता है। अचानक, जब परमेश्वर हमारे जीवनों पर अपनी ईश्वरीय कृपा प्रगट करता है, तब वह सही लोगों और सही स्थानों की ओर प्रवेश प्रदान करता है, वस्तु और सम्पत्ति की प्राप्ति प्रदान करता है।

असामान्य अवसर

परमेश्वर की कृपा हमारे जीवनों में असामान्य अवसर भी ले आती है – ऐसे अवसर जो अन्य लोगों को शायद प्राप्त न हो।

उन्नति ले आती है

क्योंकि तू उनके बल की शोभा है, और अपनी प्रसन्नता से हमारे सींग को ऊंचा करेगा (भजन 89:17)।

"सिंग" शब्द 'अगुवे' को दर्शाता है। परमेश्वर की कृपा उन्नति ले आती है।

जीवन प्रदान करती है

जब परमेश्वर अपनी कृपा प्रदान करता है, तब वह जो मरने की स्थिति में है, अचानक जीवित हो उठता है। जब परमेश्वर की कृपा हमारे जीवन पर प्रगट होती है, तब हमारे जीवन की परिस्थितियां अचानक बदल जाती हैं।

क्योंकि उसका क्रोध, तो क्षण भर का होता हैं, परन्तु उसकी प्रसन्नता जीवन भर की होती है। कदाचित् रात को रोना पड़े, परन्तु सबेरे आनन्द पहुंचेगा (भजन 30:5)।

तू ने मेरे लिये विलाप को नृत्य में बदल डाला; तू ने मेरा टाट उतरवाकर मेरी कमर में आनन्द का पटुका बान्धा है (भजन 30:11)।

3

परमेश्वर की कृपा हम पर किस कारण आती है?

ईश्वरीय कृपा व्यक्ति के जीवन पर किस कारण प्रगट होती है? निश्चित समय में विशिष्ट लोगों पर ईश्वरीय कृपा क्यों प्रगट होती है? परमेश्वर के वचन का अध्ययन करने के द्वारा मैंने कुछ उत्तर पाए जो मैंने यहां दिए हैं।

कृपा का संबंध हमारे कार्य से होता है

कृपा का संबंध हमेशा हमारे कार्य से होता है। हर एक को परमेश्वर से एक काम या जिम्मेदारी मिली है और जब भी हम अपनी जिम्मेदारियों में कार्य करने लगते हैं, परमेश्वर की कृपा हम पर उतर आती है। यहां पर बाइबल से कुछ उदाहरण दिए गए हैं:

मरियम

स्वर्गदूत ने उससे कहा, "हे मरियम, भयभीत न हो, क्योंकि परमेश्वर का अनुग्रह तुझ पर हुआ है (लूका 1:30)।

मसीह के जन्म के लिए परमेश्वर किसी और जवान कुंवारी को भी माध्यम के रूप में चुन सकता था। परंतु उसने मरियम को चुना। एक विशिष्ट कार्य के लिए – मसीह को जन्म देने के लिए वह "कृपा प्राप्त" सिद्ध हुई।

यीशु

और यीशु बुद्धि और डील–डौल में और परमेश्वर और मनुष्यों के अनुग्रह में बढ़ता गया (लूका 2:52)।

नहेम्याह

नहेम्याह ने ईश्वरीय कृपा का अनुभव क्यों किया? वह यरूशलेम की दीवारों के निर्माण कार्य में लगा हुआ था और इस कारण उसने ईश्वरीय कृपा का अनुभव किया।

यूसुफ

यूसुफ ने ईश्वरीय कृपा क्यों प्राप्त की? स्वप्न की पूर्ति के रूप में अपने लोगों के लिए छुटकारा लाने हेतु प्रधानमंत्री बनने की जिम्मेदारी में वह कार्य कर रहा था।

एस्तेर

एस्तेर ने ईश्वरीय कृपा का अनुभव किया क्योंकि उसे यहूदी लोगों को छुटकारा प्रदान करने की जिम्मेदारी प्राप्त हुई थी। एस्तेर एक अनाथ लड़की थी, अपने जीवन में वह कुछ भी नहीं बन पाती। परंतु ईश्वर की कृपा उस पर प्रगट हुई। उसे राजा क्षयर्ष की रानी बनने के लिए चुन लिया गया। और सही समय में जब एस्तेर राजा के पास निवेदन लेकर गई, तब राजा ने उसे राज महल में खड़े देखा और उसने उसकी दृष्टि में कृपा पाई। उसके हाथ में जो सोने का राजदण्ड था, उसे राजा ने एस्तेर की ओर बढ़ाया और एस्तेर ने पास जाकर उस राजदण्ड को छू लिया। राजा ने उससे पूछा, "रानी एस्तेर, तुम क्या चाहती हो? तुम्हारी बिनती क्या है? मैं उसे तुम्हें दूंगा – तुझे आधा राज्य तक दिया जाएगा!" इस प्रकार परमेश्वर की कृपा उस पर थी क्योंकि वह एक विशिष्ट कार्य पूरा करना चाहती थी। एस्तेर ने यह बाद में जाना कि वह एक कार्य कर रही है जिसके द्वारा परमेश्वर के लोगों को छुटकारा प्राप्त होगा।

अतः जब कभी हम अपने कामों को पूरा करते हैं, तब परमेश्वर की कृपा हम पर उतर आती है। इसका अर्थ यह है कि यदि हम अपने खुद के काम कर रहे हैं, तो हम कृपा के इन ईश्वरीय क्षणों को प्राप्त करने हेतु अयोग्य सिद्ध होते हैं। परंतु, जब हम परमेश्वर के कामों को करते

हैं, तब हम उसकी ईश्वरीय कृपा के उम्मीदवार बन जाते हैं। और परमेश्वर उस कृपा को हम पर प्रगट करता है क्योंकि हमारे जीवनों के लिए उसके पास काम है, जिसे वह हमारे द्वारा पूरा करना चाहता है। इसी कारण कभी कभी अनपेक्षित द्वार भी खुल जाते हैं और हमें लोगों, स्थानों की निकटता और वस्तुएं प्राप्त होती हैं जो शायद अन्य लोगों को प्राप्त नहीं होती। कभी–कभी हम हमारे हाथों में सम्पत्ति का हस्तांतरण देखते हैं। और समयों में, हम लोगों को हमारे प्रभाव के अंतर्गत यह कहते हुए आते देखते हैं, "हम उस मिशन का हिस्सा बनना चाहते हैं।" यह हमारे जीवन पर कृपा उण्डेली जा रही है।

परंतु हमें यह भी स्मरण रखना है कि ईश्वरीय कृपा के क्षण या ऋतु में, हमें काम करना जारी रखना है और वह सब कुछ करना है जो हमें स्वाभाविक तौर पर उस ज़िम्मेदारी को पूरा करने हेतु करना है जो परमेश्वर ने हमें दी है। कृपा के क्षण में राजा ने नहेम्याह की सारी बिनतियों को सुन लिया। परंतु नहेम्याह को उसके बाद परिश्रम करना पड़ा, काफी विरोध, झूठे आरोप, और आन्तरिक समस्याओं के बावजूद काम करना पड़ा, जब तक कि काम पूरा नहीं हुआ।

सावधान रहें और आपके जीवन पर परमेश्वर ने जो कृपा प्रगट की है, उसे व्यर्थ न जाने दें। परमेश्वर ने शौल पर जो कृपा प्रगट की थी उसे शौल ने बर्बाद कर दिया और परमेश्वर ने किसी और को, दाऊद को उस कार्य को पूरा करने के लिए चुन लिया।

तब यहोवा का यह वचन शमूएल के पास पहुंचा, कि मैं शाऊल को राजा बनाकर पछताता हूं; क्योंकि उसने मेरे पीछे चलना छोड़ दिया, और मेरी आज्ञाओं का पालन नहीं किया। तब शमूएल का क्रोध भड़का; और वह रात भर यहोवा की दोहाई देता रहा। तब शमूएल ने शाऊल से कहा, ठहर जा! और जो बात यहोवा ने आज रात को मुझसे कही है, वह मैं तुझको बताता हूं। उसने कहा, कह दे। शमूएल ने कहा, जब तू अपनी दृष्टि में छोटा था, तब क्या तू इस्राएली गोत्रियों का प्रधान न हो गया? और क्या यहोवा ने इस्राएल पर राज्य करने को तेरा अभिषेक नहीं

किया? और यहोवा ने तुझे यात्रा करने की आज्ञा दी, और कहा, जाकर उनप पापी अमालेकियों को सत्यानाश कर, और जब तक वे मिट न जाएं, तब तक उनसे लड़ता रह। फिर तू ने किस लिये यहोवा की वह बात टालकर लूट पर टूट के वह किया जो यहोवा की दृष्टि में बुरा है? शाऊल ने शमूएल से कहा, निःसन्देह मैंने यहोवा की बात मानकर जिध ार यहोवा ने मुझे भेजा उधर चला, और अमालेकियों के राजा को ले आया हूं, और अमालेकियों को सत्यानाश किया है। परंतु प्रजा के लोग लूट में से भेड़–बकरियों, और गाय–बैलों, अर्थात् सत्यानाश होने की उत्तम उत्तम वस्तुओं को गिलगाल में तेरे परमेश्वर यहोवा के लिये बलि चढ़ाने को ले आए हैं। शमूएल ने कहा, क्या यहोवा होमबलियों और मेलबलियों से उतना प्रसन्न होता है, जितना कि अपनी बात के माने जाने से प्रसन्न होता है? सुन, मानना तो बलि चढ़ाने से, और कान लगाना मेढ़ों की चर्बी से उत्तम है (1 शमूएल 15:10,11,16–22)।

कृपा का संबंध निश्चित समय से होता है

तू उठकर सिय्योन पर दया करेगा; क्योंकि उस पर अनुग्रह करने का ठहराया हुआ समय आ पहुंचा है (भजन 102:13)।

हमारे जीवनों में कुछ निश्चित समय होते हैं जब परमेश्वर की कृपा किसी विशिष्ट कार्य के लिए हमारे जीवनों पर प्रगट होती है। एक समय होता है – एक क्षण – जब ईश्वरीय कृपा हमारे जीवनों में प्रगट होती है और हम सोचते हैं कि हम कुछ भी न करने के बाद ऐसी कृपा को कैसे अनुभव कर सकते हैं। यह कृपा का समय है! हमारे समय उसके हाथों में है (भजन 31:15)।

कृपा के इन निश्चित समयों के मध्य, तैयारी का समय होता है जो उस कृपा को सम्भालने हेतु हमें तैयार करता है जो हमारे जीवनों पर प्रगट होने वाली है। इस दौरान, हमें उस कार्य के प्रति विश्वासयोग्य रहना है जो हमें सौंपा गया है और उस कार्य को पूरा करने हेतु जो अनुग्रह हमें दिया गया है उसके साथ स्वाभाविक तौर पर हमें कार्य करते रहना है। और जब हमें यह कृपा प्राप्त होती है, तब हमें उसका

गलत उपयोग नहीं करना है, ताकि हमारे जीवनों पर परमेश्वर की कृपा की अगली बारिश के लिए हम तैयार रह सकें।

कृपा का संबंध धार्मिकता से है

क्योंकि तू धर्मी को आशीष देगा; हे यहोवा, तू उसको अपने अनुग्रहरूपी ढाल से घेरे रहेगा (भजन 5:12)।

जब तू गिड़गिड़कार बिनती करने लगा, तब ही इसकी आज्ञा निकली, इसलिये मैं तुझे बताने आया हूं, क्योंकि तू अति प्रिय ठहरा है; इसलिये उस विषय को समझ ले और दर्शन की बात का अर्थ बूझ ले। तब उसने मुझ से कहा, हे दानिय्येल, हे अति प्रिय पुरुष, जो वचन मैं तुझ से कहता हूं उसे समझ ले, और सीधा खड़ा हो, क्योंकि मैं अभी तेरे पास भेजा गया हूं। जब उसने मुझ से यह वचन कहा, तब मैं खड़ा तो हो गया परन्तु थरथराता रहा। और उसने कहा, हे अति प्रिय पुरुष, मत डर, तुझे शान्ति मिले; तू दृढ़ हो और तेरा हियाव बन्धा रहे। जब उसने यह कहा, तब मैंने हियाव बान्ध कर कहा, हे मेरे प्रभु, अब कह, क्योंकि तू ने मेरा हियाव बन्धाया है (दानिय्येल 9:23,10:11,19)।

कृपा का संबंध धार्मिकता से है। दानिय्येल उस व्यक्ति का एक बड़ा उदाहरण है जो धार्मिकता के पक्ष में खड़ा रहा। मुश्किल परिस्थितियों में भी वह धार्मिकता में चलता रहा। परमेश्वर ने उसे "अति प्रिय" कहा। परमेश्वर धर्मी को आशीष देगा। वह ढाल की नाई उन्हें अपनी कृपा से घेर लेगा। अतः जब हम धार्मिकता में चलते हैं, तब हम ईश्वरीय कृपा से घिर जाते हैं। इसलिए हमारे संपर्क में चाहे जो आए, वे इस अदृश्य कृपा –कृपा की ढाल के संपर्क में आएगा।

कृपा और सच्चाई तुझ से अलग न होने पाएं; वरन उनको अपने गले का हार बनाना, और अपनी हृदयरूपी पटिया पर लिखना।और तू परमेश्वर और मनुष्य दोनों का अनुग्रह पाएगा, तू अति बुध्दिमान होगा (नीतिवचन 3:3,4)।

भले मनुष्य से तो यहोवा प्रसन्न होता है, परन्तु बुरी युक्ति करनेवालों को वह दोषी ठहराता है (नीतिवचन 12:2)।

दो बातें हैं जो परमेश्वर चाहता है कि हम अपने हृदय में रखें – "दया" जो की करूणा है, और "सत्य" जो की खराई, सीधाई और ईमानदारी है। परमेश्वर कहता है कि यदि हम इन दोनों बातों को बनाए रखें, तब हम परमेश्वर और मनुष्य दोनों के सम्मुख कृपा और बड़ा आदर पाएंगे। इस प्रकार हमारे जीवनों की ओर तब कृपा वास्तव में आकर्षित होती है, जब हम दया और सत्य के साथ चलते हैं।

कृपा का संबंध बुद्धि और समझ से है

क्योंकि जो मुझे पाता है, वह जीवन को पाता है, और यहोवा उससे प्रसन्न होता है (नीतिवचन 8:35)।

सुबुध्दि के कारण अनुग्रह होता है, परन्तु विश्वासघातियों का मार्ग कड़ा होता है (नीतिवचन 13:15)।

जो कर्मचारी बुध्दि से काम करता है उस पर राजा प्रसन्न होता है, परन्तु जो लज्जा के काम करता, उस पर वह रोष करता है (नीतिवचन 14:35)।

कृपा का संबंध बुद्धि और समझ से है। जब हम बुद्धि और समझ के साथ चलने का चुनाव करते हैं, तब हम जीवन और कृपा पाते हैं। जब परमेश्वर जानता है कि जो कुछ वह हमें देता है, उसका हम सही उपयोग करेंगे, तब वह हम पर कृपा करेगा। इसलिए हमें बुद्धि और समझ को मूल्यवान समझना सीखना है, इस प्रकार हमारे जीवनों में परमेश्वर की कृपा को स्वीकार करने के लिए हमें स्थान ग्रहण करना है।

हे यहोवा, अपनी प्रजा पर की प्रसन्नता के अनुसार मुझे स्मरण कर, मेरे उद्धार के लिये मेरी सुधि ले (भजन 106:4)।

मैंने पूरे मन से तुझे मनाया है; इसलिये अपने वचन के अनुसार मुझ पर अनुग्रह कर (भजन 119:58)।

राजा का मन नालियों के जल की नाई यहोवा के हाथ में रहता है, जिध ार वह चाहता उधर उसको फेर देता है (नीतिवचन 22:1)।

मैं आपको प्रोत्साहन देना चाहता हूं कि

- ईश्वरीय कृपा के लिए प्रार्थना करें।
- ईश्वरीय कृपा के लिए तैयार हो जाएं।
- ईश्वरीय कृपा पाने की अपेक्षा करें।

अपने संपूर्ण हृदय से परमेश्वर से कृपा की याचना करें क्योंकि ईश्वरीय कृपा की यह आशीष आपके जीवनों में अद्भुत कार्य कर सकती है। कृपा के क्षणों में, कृपा की ऋतुओं में, आप ऐसी वस्तुओं को प्राप्त कर सकते हैं जिन्हें पैसा आपके लिए खरीद नहीं पाएगा। बंदीगृह से प्रध ाानमंत्री के स्थान में तबादला पाने के लिए यूसुफ कितना पैसा दे सकता था? रानी बनने के लिए एस्तेर कितना पैसा दे सकती थी? अपने सारे निवेदनों का उत्तर पाने के लिए नहेम्याह राजा को कितना पैसा दे सकता था?

चाहे आपकी नौकरी हो, पेशा, कारोबार, सेवकाई, शिक्षा या और कोई बात हो, परमेश्वर से बिनती करें कि वह अपनी कृपा आपके जीवन पर प्रगट करे। आप प्रभु से कृपा पाने हेतु बिनती कर सकते हैं। और जब वह कृपा आप पर उण्डेली जाएगी, तब एक क्षण में, अनोखी बातें घटित होगी, अवसरों के द्वार खुल जाएंगे, आपकी परिस्थितियां बदल जाएगी और वह आपके विलाप को नृत्य में बदल देगा।

प्रार्थना

सर्वशक्तिमान परमेश्वर, मैं बुद्धि और धार्मिकता के साथ चलूंगा। मैं ईश्वरीय कृपा पाने हेतु खुद को तैयार करता हूं और ईश्वरीय कृपा पाने की अपेक्षा करता हूं! उसी तरह, कृपा के निश्चित समयों के अंतराल में, मैं आपकी बुलाहट के प्रति विश्वासयोग्य रहूंगा। मैं कृपा के अगले निर्धारित समय को खोना नहीं चाहता जो मेरे जीवन के लिए आपके पास है, तब बातें अचानक बदल जाएंगी। यीशु के नाम में, आमेन!

4

परमेश्वर की कृपा का भण्डारी बनना

हमारे जीवनों पर परमेश्वर की कृपा को प्राप्त करना यह केवल अनुग्रह का कार्य है। परमेश्वर हम पर कृपा प्रगट करता है और हम उसे पाने के लिए स्थान ग्रहण करते हैं। परंतु, इसके बाद हम जो कुछ करते हैं, वह महत्वपूर्ण है। हम परमेश्वर की कृपा को कैसे संभालते हैं यह इस बात को निर्धारित करेगा कि क्या हम अपने काम में उन्नति कर रहे हैं और क्या परमेश्वर के उद्‌देश्य अंत में पूरे हो रहे हैं। उसी तरह, परमेश्वर की कृपा के उचित रीति से भण्डारी बनने के द्वारा यह तय होगा कि क्या हमें निरंतर कृपा प्राप्त होती रहेगी, क्योंकि उसके राज्य में, थोड़ी बातों में विश्वासयोग्यता हमें अधिक बातें प्राप्त करने हेतु तैयार करेगी।

बाइबल में हम ऐसे लोगों को देखते हैं जो ईश्वरीय कृपा के अच्छे भण्डारी थे। कुछ उदाहरण हैं, यूसुफ जिसने ईश्वरीय कृपा प्राप्त की जिसके द्वारा वह विदेश में प्रधानमंत्री बना, वह प्रभु के प्रति विश्वसनीय रहा, उसने अपने काम को पूरा किया और अपने भाइयों को भी वह कृपा प्रदान की जिन्होंने उसके साथ बुराई की थी।

दाऊद ने ईश्वरीय कृपा को अनुभव किया जिसने उसे एक साधारण चरवाहे से इस्राएल का एक सामर्थी राजा बनाया। यद्यपि उसने अपने जीवन में कुछ गलतियां की, फिर भी वह अंत तक प्रभु के प्रेम और भय में चलता रहा। उसने अपने आसपास के लोगों का आदर किया और उस कृपा का वह अच्छा भण्डारी रहा जो परमेश्वर ने उसके जीवन पर उण्डेली थी।

नहेम्याह इसका एक और अनोखा उदाहरण है। उसने अपने काम को पूरा किया और यरूशलेम नगर की दीवारों के पुनर्निर्माण की

देखरेख की और उसे अगुवा (हाकिम) स्वीकार किया गया, फिर भी उसने उन विशेष अधिकारों का लाभ उठाने से इन्कार किया जिनका वह आनन्द उठा सकता था। उसके अपने शब्दों में : *फिर जब से मैं यहूदा देश में उनका अधिपति ठहराया गया, अर्थात् राजा अर्तक्षत्र के बीसवें वर्ष सें ले उसके बत्तीसवें वर्ष तक, अर्थत् बारह वर्ष तक मैं और मेरे भई अधिपति के हक का भोजन खाते रहे। परंतु पहले अधिपति जो मुझसे आगे थे, वह प्रजा पर भार डालते थे, और उनसे रोटी, और दाखमधु, और इससे अधिक चालीस शेकेल चान्दी लेते थे, वरन उनके सेवक भी प्रजा के ऊपर अधिकार जताते थे; परंतु मैं ऐसा नहीं करता था, क्योंकि मैं यहोवा का भय मानता था। और जो प्रति दिन के लिए तैयार किया जाता था वह एक बैल, छः अच्छी अच्छी भेड़ें व बकरियां थीं, और मेरे लिए चिड़ियें भी तैयार की जाती थीं; दस दस दिन के बाद भांति भांति का बहुत दाखमधु भी तैयार किया जाता था; परंतु तौभी मैंने अधिपति के हक का भोजन नहीं लिया* (नहेम्याह 5:14,15,18)।

एस्तेर ईश्वरीय कृपा का अनुभव कर रानी बन गई। उसने अपनी इच्छा से परमेश्वर के लोगों के लिए अपने जीवन को जोखिम में डाला और प्रभाव के स्थान पर रखा।

इस तरह कई लोग हैं जो उनके जीवनों पर परमेश्वर की जो कृपा थी, उसके अच्छे भण्डारी बने।

परंतु, हम उन लोगों को भी देखते हैं जिन्होंने परमेश्वर द्वारा उन पर उण्डेली गई कृपा को व्यर्थ कर दिया। राजा सुलैमान पर परमेश्वर ने बड़ी बुद्धि, धन, प्रभाव और शांति देकर कृपा की – परंतु वह स्त्रियों के प्रेम की वजह से राह भटक गया। इसके द्वारा इस्राएल के एक महिमामय राज्य का नाश हो गया। राजा हिजकिय्याह यहूदा का अच्छा राजा था जिसने धार्मिकता की बेदारी और प्रभु की ओर लौटने के समय को देखा। “इसलिये यहोवा उसके संग रहा; और जहां कहीं वह जाता था, वहां उसका काम सफल होता था” (2 राजा 18:7)। परमेश्वर ने उसे बड़ा छुटकारा और विजय भी प्रदान की। और फिर

भी अपने राज्य के अंत में उसने एक बड़ी गलती की। परमेश्वर ने उसे जो सौंपा था, उसकी उसने रक्षा नहीं की, और उसे अगली पीढ़ी को उत्तराधिकार के रूप में नहीं दिया। इसके बजाए, उसने बाबुल के राजा के सामने यहूदा की सम्पत्ति को खोल दिया, जिसकी वजह से बाबुल का राजा उस देश को बंधुवा बनाकर ले गया (2 राजा 20:12–20)।

यहां कुछ महत्वपूर्ण बातें बताई गई हैं जिन्हें हमें करने की ज़रूरत है ताकि उचित रीति से परमेश्वर द्वारा हमारे जीवनों पर प्रगट की गई कृपा की उचित रखवाली करें।

परमेश्वर को सारी महिमा दें

हे यहोवा, हमारी नहीं, हमारी नहीं, वरन् अपने ही नाम की महिमा, अपनी करूणा और सच्चाई के निमित्त कर (भजन 115:1)।

हमारे जीवनों पर परमेश्वर की कृपा को प्राप्त करने वाले होने के नाते, हमें इस बात का यकीन कर लेना है कि हम अपनी आंखों को उस पर बनाएं रखें और उसकी दया के कारण जो कुछ हमने पाया है उसके लिए उसे स्तुति, आदर प्रदान करें।

ईश्वरीय कृपा की आशीष को बांटें

फिर उसने उनसे कहा,कि जाकर चिकना चिकना भोंजन करो और मीठा मीठा रस पियो, और जिनके लिए कुछ तैयार नही हुआ उनके पास बैना भेजो; क्योंकि आज का दिन हमारें प्रभु के लिए पवित्र है, और उदास मत रहो, क्योंकि यहोवा का आनंद तुम्हारा दृढ गढ़ है। (नहेम्याह 8:10)।

जब हम हमारे जीवनों पर परमेश्वर की कृपा का आनंद अनुभव करते हैं, तब हमें स्मरण रखना है कि हम उसे अपने आसपास के लोगों को बांटें। हमारे आसपास के कुछ लोग शायद जीवन की भिन्न ऋतुओं से गुज़र रहे होंगे – शायद कुछ संघर्षों, कुछ ज़रूरतों और चुनौतियों

की वजह से। हमें अपने जीवनों में प्राप्त भलाई में से उनके जीवनों में उण्डेलना है। परमेश्वर हमें इसलिए आशीष देता है, ताकि हम आशीष बन सकें।

परमेश्वर की कृपा का गलत उपयोग न करें

परमेश्वर की कृपा इसलिए नहीं है कि हम उसे खुद पर मनमाना खर्च करें। न ही परमेश्वर ने हमें जो सौंपा है, उसका हम गलत उपयोग करें। हम पर परमेश्वर की कृपा का मतलब यह नहीं है कि हम दूसरों से बेहतर हैं। हम पर परमेश्वर की कृपा का मतलब यह नहीं है कि दूसरों की तुलना में हम पर अधिक प्यार किया गया है।

बढ़ते रहें

कृपा की ऋतु का आनंद तो हम उठा सकते हैं, परंतु इसका मतलब यह नहीं है कि हम परमेश्वर के साथ हमारी यात्रा में 'रूकने' का स्थान बन जाएं। परमेश्वर चाहता है कि हम महिमा से महिमा की ओर बढ़ते चले जाएं और उसके स्वरूप में बदलते चले जाएं। कृपा की हर ऋतु हमें आगे की ओर और ऊंचाई की ओर और परमेश्वर की गहराई की ओर बढ़ाए। वह हमें समर्पण, अनुशासन और परमेश्वर के राज्य के लिए त्याग और बलिदान के और ऊंचे स्तर की ओर आगे बढ़ाने पाए। जितना अधिक वह मुझे देता है, उतना अधिक मैं उसकी वेदी पर समर्पित हो जाता हूं।

जो कुछ हमें दिया गया है उसकी रक्षा करें

कृपा को सम्भालकर रखा जाना है। जो कुछ परमेश्वर ने हमें दिया है उसकी हमें रक्षा करना है। एक शत्रु है जो परमेश्वर द्वारा हम पर उण्डेली गई भलाई को विपत्ति के कारणों में बदलने का प्रयास करता है। शत्रु चोरी करने, घात करने, और नाश करने का प्रयास करता है। जब राजा दाऊद ने बड़ी सफलता देखी और "कुछ क्षण के लिए सुरक्षा हटाने" का निर्णय लिया, तब वह बतशेबा के साथ पाप में गिर गया।

अतः हमारे जीवनों पर प्रगट की गई कृपा की रक्षा करने हेतु हमें निरंतर जागृत रहना है। सामान्य तौर पर, कृपा हर प्रकार के लोगों को हमारी ओर आकर्षित करती है। उनमें से सभी लोग सही उद्देश्य से नहीं आते। कई लोग हमारे जीवनों पर प्रगट कृपा का अपने स्वार्थपूर्ण कामों के लिए लाभ उठाना चाहते हैं। "साझेदारियों" और "मित्रता" के विषय में सावधान रहें, जिसमें आप कृपा की ऋतु में प्रवेश करते हैं। सबकुछ साफ और शुद्ध बनाए रखें। समझौता करने से इन्कार करें और हमेशा ज्योति में चलते रहें। उन लोगों से दूर रहें जिनके हृदय के इरादे, जीवन के उदाहरण और आदर्श परमेश्वर के वचन के अनुसार नहीं हैं।

उसे आने वाली पीढ़ियों को दें

कृपा एक विरासत है जिसकी हमें रखवाली करना है और जिसे आने वाली पीढ़ी को देना है। जब हम अपने बाद आने वाले लोगों को परमेश्वर की भलाई के विषय में और उसकी भलाई के अच्छे भण्डारी कैसे बनें इस विषय में सिखाते हैं, तब हम उन्हें वही कृपा पाने हेतु और उस कृपा के साथ चलने हेतु तैयार करते हैं जिसका हमने अनुभव किया है। यदि हम ईश्वरीय कृपा को अनुभव करते हैं और आने वाली पीढ़ियों को यह समझने में मदद नहीं करते हैं कि ईश्वरीय कृपा में चलने हेतु किस बात की ज़रूरत है – तो जो कुछ हमारे पास है वह अवश्य ही व्यर्थ हो जाएगा और घट जाएगा। परंतु, यदि आने वाली पीढ़ियों को यह सिखाया जाता है कि ईश्वरीय कृपा में कैसे चलें, तो जो कुछ हमारे साथ आरम्भ हुआ वह आगे बढ़ेगा, बढ़ौत्तरी पाएगा और आने वाली पीढ़ियों के लिए परमेश्वर के उद्देश्यों को आगे बढ़ाएगा।

ऑल पीपल्स चर्च के प्रतिभागी

स्थानीय कलीसिया के रूप में संपूर्ण भारत देश में, विशेषकर उत्तर भारत में सुसमाचार प्रचार करने के द्वारा ऑल पीपल्स चर्च अपनी सीमाओं के पार सेवा करता है; उसका मुख्य लक्ष्य (अ) अगुवों को दृढ़ करना, (ब) जवानों को सेवा के लिए सुसज्जित करना और (क) मसीह की देह की उन्नति करना है। संपूर्ण वर्षभर जवानों, और पासबानों तथा सेवकों के लिए कई प्रशिक्षण कार्यक्रमों और पासबानों की महासभाओं का आयोजन किया जाता है। इसके अलावा, वचन में और आत्मा में विश्वासियों की उन्नति करने के उद्देश्य से अंग्रेजी तथा अन्य कई भारतीय भाषाओं में पुस्तकों की कई हज़ारों प्रतियां विनामूल्य वितरीत की जाती हैं।

जिन बातों की ओर परमेश्वर हमारी अगुवाई कर रहा है उसके लिए काफी पैसों की ज़रूरत होती है। हम आपको निमंत्रित करते हैं कि एक समय की भेंट या मासिक मदद भेजकर आर्थिक रूप से हमारे साथ भागीदार बनें। देश भर में हमारे इस कार्य में हमारी सहायता करने हेतु आपके द्वारा भेजी गई कोई भी रकम सराहनीय होगी।

आप अपनी भेंट "ऑल पीपल्स चर्च, बैंगलोर" के नाम से चेक/बैंक ड्राफ्ट के जरिए हमारे ऑफिस के पते पर भेज सकते हैं। अन्यथा आप अपना योगदान सीधे हमारे बैंक खाते की जानकारी लेकर सीधे बैंक में जमा कर सकते हैं। *(कृपया इस बात को ध्यान में रखें : ऑल पीपल्स चर्च के पास एफ.सी.आर.ए. परमीट नहीं है, अतः हम केवल भारतीय नागरिकों से बैंक योगदान पा सकते हैं। यदि आप चाहते हैं, तो दान भेजते समय, आप स्पष्ट रूप से यह लिख सकते हैं कि ए.पी.सी. की किस सेवकाई के लिए आप अपने दान भेजना चाहते हैं।)*

बैंक खाते का नाम : ऑल पीपल्स चर्च

खाता क्रमांक : 0057213809

आय एफ एस सी क्रमांक : CITI0000004

बैंक : Citibank N.A., 506-507, Level 5, Prestige Meridian 2, # 30, M.G. Road, Bangalore - 560 001

उसी तरह, कृपया जब भी हो सके, हमें और हमारी सेवकाई को प्रार्थना में स्मरण रखें। **धन्यवाद और परमेश्वर आपको आशीष दे।**

ऑल पीपल्स चर्च के प्रकाशन

बदलाव
अपनी बुलाहट से समझौता न करें
आशा न छोड़ें
परमेश्वर के उद्देश्यों को जन्म देना
परमेश्वर एक भला परमेश्वर है
परमेश्वर का वचन
सच्चाई
हमारा छुटकारा
समर्पण की सामर्थ
हम भिन्न हैं
कार्यस्थल पर महिलाएं
जागृति में कलीसिया
प्रत्येक काम का एक समय
आत्मिक मन से परिपूर्ण और पृथ्वी पर बुद्धिमान
पवित्रा लोगों को सिद्ध बनाना
अपने पास्टर की कैसे सहायता करें
कलह रहित जीवन जीना
एक वास्तविक स्थान जो स्वर्ग कहलाता है
परिशद्ध करने वाले की आग
व्यक्तिगत और पीढ़ियों के बन्ध्नों को तोड़ना
आपके जीवन के लिए परमेश्वर के उद्देश्य को पहचानना
राज्य का निर्माण करने वाले
खुला हुआ स्वर्ग
हम मसीह में कौन हैं
ईश्वरीय कृपा
परमेश्वर का राज्य
शहरव्यापी कलीसिया में ईश्वरीय व्यवस्था
मन की जीत
जड़ पर कुल्हाडी रखना
परमेश्वर की उपस्थिति
काम के प्रति बाइबल का रवैया
ज्ञान, प्रकाश और सामर्थ का आत्मा
अन्य अन्य भाषाओं में बोलने के अदभुत लाभ
प्राचीन चिन्ह

उपर्युक्त सभी पुस्तकों के पी डी एफ संस्करण निःशुल्क डाऊनलोड के लिए हमारे चर्च वेब साईट पर उपलब्ध हैं। इनमें से कई पुस्तकें अन्य भाषाओं में भी उपलब्ध हैं। इन पुस्तकों की निःशुल्क प्रतियां प्राप्त करने हेतु कृपया हमसे ई–मेल या डाक द्वारा संपर्क करें।

रविवार के संदेश के एम पी 3 ऑडियो रिकार्डिंग, तथा कॉन्फ्रन्स और हमारे गॉड टी. व्ही. कार्यक्रम 'लिविंग स्ट्रांग' के विडियो रिकार्डिंग को सुनने या देखने के लिए हमारे वेब साईट को भेंट दें।

बाइबल कॉलेज

विश्वसनीय एवं योग्य स्त्री और पुरुषों को सुसज्जित करने, प्रशिक्षित करने और भारत तथा अन्य देशों में सेवा हेतु भेजने के उद्देश्य से ऑगस्ट 2005 में ऑल पीपल्स चर्च – बाइबल कॉलेज एवं मिनिस्ट्री ट्रेनिंग सेन्टर (APC - BC& MTC) की स्थापना की गई, ताकि गांवों, नगरों और शहरों को यीशु मसीह के लिए प्रभावित किया जा सके।

APC - BC& MTC दो कार्यक्रम प्रदान करता है :

- दो साल का **बाइबल कॉलेज** कार्यक्रम पूर्णकालीन विद्यार्थियों के लिए है और उत्कृष्ट शिक्षा के साथ आत्मिक और व्यवहारिक सेवा प्रशिक्षण प्रदान करता है। दो वर्षीय कार्यक्रम पूरा करने के बाद विद्यार्थियों को **डिप्लोमा इन थियोलॉजी ऑण्ड क्रिश्चियन मिनिस्ट्री** (Dip. Th.& CM) प्रदान की जाएगी।
- प्रेक्टिकल मिनिस्ट्री ट्रेनिंग बाइबल कॉलेज के उन पद्वीधरों के लिए है जो व्यवहारिक प्रशिक्षण पाना चाहते हैं। एक या दो साल पूरा करने वालों को **सर्टिफिकेट इन प्रेक्टिकल मिनिस्ट्री** प्रदान किया जाएगा जो उनके प्रशिक्षण काल को दर्शाता है।

कक्षाएं अंग्रेजी में होती हैं। हमारे पास प्रशिक्षित तथा अभिषक्त शिक्षक हैं।

इसके अतिरिक्त, सन 2012 में, चाम्पा क्रिश्चियन हॉस्पिटल की सहभागिता से हमने चाम्पा, छत्तीसगढ़ में अपने प्रथम अल्पकालीन (2.5 महीने) कार्यक्रम का संचालन किया। हमने इस कॉलेज से 45 विद्यर्थियों को प्रशिक्षित किया।

क्या आप उस परमेश्वर को जानते हैं जो आपको प्यार करता है?

लगभग 2000 वर्ष पहले परमेश्वर इस संसार में एक मनुष्य बनकर आए। उनका नाम यीशु है। उन्होंने पूर्ण पापरहित जीवन जीया। चूँकि यीशु मानव रूप में परमेश्वर थे, उन्होंने जो कुछ कहा और किया उसके द्वारा हमारे समक्ष परमेश्वर को प्रकट किया। उन्होंने जो वचन कहे वे परमेश्वर के ही वचन थे। जो कार्य उन्होंने किये वे परमेश्वर के कार्य थे। यीशु ने बहुत से चमत्कार इस पृथ्वी पर किये। उन्होंने बीमारों और पीड़ितों को चंगा किया। अंधों को आंखें दीं, बहिरों के कान खोले, लंगड़ों को चलाया और हर प्रकार की बीमारी और रोग को चंगा किया। उन्होंने चमत्कार करके कुछ रोटियों से बहुतों को खाना खिलाया था। तूफान को शान्त किया और अन्य बहुत से अद्भुत काम किए।

ये सभी कार्य हमारे समक्ष यह प्रकट करते हैं कि परमेश्वर एक भला परमेश्वर है जो यह चाहता कि मनुष्य ठीक, स्वस्थ और प्रसन्न रहें। परमेश्वर मनुष्यों की सभी आवश्यकताओं की पूर्ति करना चाहता है।

परमेश्वर ने मानव बनकर इस पृथ्वी पर आने का निश्चय क्यों किया? यीशु इस संसार में क्यों आए?

हम सबने पाप किया है और ऐसे काम किए हैं जो परमेश्वर के समक्ष ग्रहण योग्य नहीं हैं जिसने हमें बनाया है। पाप के परिणाम होते हैं। पाप एक बड़ी दीवार की तरह परमेश्वर और हमारे बीच में खड़ी है। पाप हमें परमेश्वर से अलग करता है। वह हमें उसे जानने और उससे अर्थपूर्ण सम्बन्ध स्थापित करने से रोकता है जिसने हमें बनाया है। अत: हममें से बहुत से लोग इस खालीपन को अन्य वस्तुओं से भरना चाहते हैं।

हमारे पापों का एक और परिणाम यह है कि हम परमेश्वर से सदा के लिए दूर रहते हैं। परमेश्वर के न्यायालय में पाप का दण्ड मृत्यु है। मृत्यु परमेश्वर से सदा के लिए अलगाव है जो हमें नर्क में बिताना पड़ेगा।

परन्तु शुभ समाचार यह है कि हम पाप से मुक्त होकर परमेश्वर से सम्बन्ध रख सकते हैं। बाइबल कहती है, **''पाप की मजदूरी (भुगतान) तो मृत्यु है, परन्तु परमेश्वर का वरदान हमारे प्रभु मसीह यीशु में अनन्त जीवन है''** (रोमियों 6:23)। यीशु ने सारे संसार के पापों के लिए मूल्य चुकाया जब उसने क्रूस पर अपने प्राण दिये। तब तीसरे दिन वह जीवित हो गए, बहुतों को उन्होंने अपने आपको जीवित दिखाया और तब वह वापस स्वर्ग चले गए।

परमेश्वर प्रेम और दया का परमेश्वर है। वह नहीं चाहता कि कोई भी नर्क में नाश हो। इसलिए वह आया ताकि सारी मानव जाति को पाप से छुटकारे और उसके अनन्त परिणामों

से बचा सके। वह पापियों को बचाने– आप और मुझ जैसे लोगों को पाप और अनन्त मृत्यु से बचाने आया था।

पाप की निशुल्क क्षमा प्राप्त करने के लिए बाइबल हमें बताती है कि हमें केवल एक काम करना है–जो कुछ उसने क्रूस पर किया उसे स्वीकार करना और उस पर पूर्ण हृदय से विश्वास करना है।

जो कोई उस पर विश्वास करेगा, उसको उसके नाम के द्वारा पापों की क्षमा मिलेगी (प्रेरितों के काम 10:43)।

यदि तू अपने मुंह से यीशु को प्रभु जानकर अंगीकार करे और अपने मन से विश्वास करे, कि परमेश्वर ने उसे मरे हुओं में से जिलाया, तो तू निश्चय उद्धार पाएगा (रोमियों 10:9)।

आप भी अपने पापों की क्षमा और उनसे छुटकारा पा सकते हैं यदि आप प्रभु मसीह पर विश्वास करें।

निम्नलिखित एक साधरण प्रार्थना है ताकि इससे आपको यह फैसला करने में और प्रभु यीशु मसीह के द्वारा आपके लिए किए क्रूस के कार्य पर विश्वास करने में सहायता कर सके। यह प्रार्थना आपकी सहायता करेगी कि आप यीशु के कार्य को स्वीकार करके अपने पापों की क्षमा और उनसे छुटकारा पा सकें। यह प्रार्थना मात्र एक मार्गदर्शिका है। आप अपने शब्दों में भी प्रार्थना कर सकते हैं :

प्रिय प्रभु यीशु, आज मैंने समझा है कि आपने मेरे लिए क्रूस पर क्या किया था। आप मेरे लिए मारे गए! आपने अपना बहुमूल्य रक्त बहाया और मेरे पापों की कीमत चुकाई ताकि मुझे पापों की क्षमा मिले। बाइबल मुझे बताती है कि जो कोई आप में विश्वास करता है उसे उसको पापों की क्षमा मिलती है।

आज मैं आपमें विश्वास करने और जो कुछ आपने मेरे लिए किया है, उसको स्वीकार करने का फैसला करता हूँ, कि आप क्रूस पर मारे गए और फिर जीवित हो गए। मैं जानता हूँ कि मैं अपने आपको अच्छे कामों के द्वारा नहीं बचा सकता हूँ। मैं अपने पापों की क्षमा कमा नहीं सकता हूँ।

आज मैं अपने हृदय में विश्वास करता हूँ और मुँह से कहता हूँ कि आप मेरे लिए मारे गए। आपने मेरे पापों का दण्ड चुकाया। आप मृतकों में से जीवित हो गए और आपमें विश्वास करने के द्वारा मैं अपने पापों की क्षमा और पाप से छुटकारा प्राप्त करता हूँ।

प्रभु यीशु धन्यवाद। मेरी सहायता करें कि मैं आपको प्रेम कर सकूँ। आपको और अधिक जान सकूँ और आपके प्रति विश्वासयोग्य रह सकूँ। आमीन!

नोट्स

परमेश्वर हर एक व्यक्ति से समान रूप में प्रेम करता है और वह लोगों का पक्षपात नहीं करता। उसके मनुष्य जाति के साथ व्यवहार में हम पाते हैं कि परमेश्वर कुछ व्यक्तियों या लोगों के समूह पर उनके जीवनों के किसी निश्चित समय में, निश्चित ऋतुओं या क्षणों में अपनी कृपा प्रगट करता है।

ईश्वरीय कृपा परमेश्वर का दान है, जो व्यक्ति के जीवन में प्रगट होती है। इसी बात के प्रति मैं हमें जागृत करना चाहता हूं, ताकि हम परमेश्वर की ओर से ईश्वरीय कृपा प्राप्त करने की अपेक्षा कर सकें।

आशीष रायचूर

All Peoples Church & World Outreach
319, 2nd Floor, 7th Main, HRBR Layout,
2nd Block, Kalyan Nagar, Bangalore 560 043
Karnataka, INDIA

Phone: +91-80-25452617, +91-80-65970617
Email: contact@apcwo.org
Website: www.apcwo.org